चार्वाक में सुखवाद

भारतीय दर्शन की आध्यात्मिक प्रवृत्ति के बीच चार्वाक दर्शन एक अपवाद है, जो 'जड़वाद' की अभिव्यक्ति करता है। जड़वाद में जड़ को ही एकमात्र तत्व मानकर उसके द्वारा सभी पदार्थो के अस्तित्व और उत्पत्ति की विवेचना की जाती है। भौतिक पदार्थ ही नहीं, बल्कि आत्मा और मन भी इसी जड़ तत्व के रूपांतर माने जाते हैं। 'खाओ, पियो और मौज करो' इस दर्शन का मूलमंत्र है। संभवत: खाने-पीने पर अधिक बल देने के कारण ही इसे चार्वाक दर्शन की संज्ञा दी गई है। यह नास्तिक, अनीश्वरवादी, प्रत्यक्षवादी तथा सुखवादी दर्शन है। यह प्रत्यक्ष को ही ज्ञान का एकमात्र साधन मानता है। 'प्रत्यक्षमेव प्रमाणम' इस दर्शन की मुख्य उक्ति है। चार्वाक विश्व का अस्तित्व स्वीकार करता है, क्योंकि उसका प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। लेकिन आत्मा को नहीं मानता, क्योंकि उसका प्रत्यक्षीकरण नहीं होता। भारतीय दार्शनिकों द्वारा बताए गए जीवन के चार पुरुषार्थो - धर्म, मोक्ष, अर्थ और काम में से चार्वाक सिर्फ अर्थ और काम को ही महत्व प्रदान करता है। इनमें से 'अर्थ' को वह सुख की प्राप्ति में सहयोग प्रदान करने वाला तथा 'काम' को चरम लक्ष्य मानता है। उसके अनुसार काम अर्थात इच्छाओं की तृप्ति ही जीवन का चरम लक्ष्य है। सुखवाद की अतिवादिता के कारण ही चार्वाक दर्शन निंदनीय माना गया है।

सुखवाद से तात्पर्य सुख या आनंद की अनुभूति से है ।वैदिक दर्शन में सुख योग तथा इंद्रिय निग्रह में छुपा है। लेकिन चार्वाक सुख को भोगवादी इंद्री आग्रह में खोजते हैं ।इसलिए चार्वाक की नैतिकता सामान्य नैतिकता से परे हो जाती है।

वे चार पुरुषार्थओं में अर्थ और काम को आदर्श मानते हैं । जिसको प्रमाणिक बना ने के लिए ज्ञान मीमांसा एवं तत्वमीमांसा को लाते हैं और कहते हैं प्रत्यक्ष अनुभव या इंद्री अनुभव केवल का अर्थ में होता है। स्पर्श से मिला सुख यथार्थ है। देख सुन व स्वाद से मिला सुख यथार्थ है । अतः यही पुरुषार्थ है तथा यही नैतिक है।

वे कहते हैं कि समानता सुख दुख से मिला होता है अर्थात प्रत्येक सुख के पीछे दुख छुपा होता है यदी दुख की चिंता करेंगे सुख भोग नहीं पाएंगे ।अत: दुख भोगने सीखो या दुख में सुख भोगना सीख लो। नैतिक अनैतिक सही-गलत, उचित-अनुचित, स्वर्ग -नरक की चिंता मत करो और जहां से सुख मिले जैसा सुख मिले वैसा जीओ क्योंकि कोई परलोक नहीं कोई आत्मा नहीं कोई ईश्वर नहीं जो सजा दे वेदों में बताए गए कर्तव्य नैतिक इसका क्या प्रमाण है ?बात के सुख के लिए आज का सुख क्यों छोड़ना वैसे भी यह ब्रह्मांण ने बनाया है। इसलिए वर्तमान में जीव प्रत्येक दिन सुख के लिए जियो तथा इंद्रिय सुख के लिए जियो। लेकिन चार्वाक का विचार स्वार्थी सुखवाद की ओर ले जाते हैं जिससे ऊपरी स्तर के सुख प्राप्त होते हैं लेकिन इससे वे उत्तर व आंतरिक सुख से दूर हो जाते हैं।

000